Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

लिपियों का प्रयोग और संताली वर्णों में विविधता

डॉ. धनेश्वर मांझी
सहायक प्रोफेसर, संताली विभाग, भाषा भवन, विश्वभारती, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल।

शोध सारांश : रूप में संताली समृद्धशाली लोक एवं शिष्ट साहित्य की परम्परा के बावजूद संताली भाषा का मानक रूप निर्धारण नहीं हो सका है। इसलिए शब्द उच्चारण, शब्द प्रयोग तथा वाक्य सरचना में एकरूपता नहीं आ पायी है। हालांकि 22 दिसम्बर 2003 को भारतीय संविधान की आठवों अनुसूची के तहत इसे भाषा का दरजा प्रदान कर दिया गया है, परंतु संताली भाषा के मानकीकरण का सवाल अभी तक हल नहीं किया जा सका है। संताली भाषा पांच लिपियों देवनागरी, उडिया, बाला, रोमन के साथ उनके पास अपनी स्वयं की लिपि श्ओलचिकिश है जो संताली भाषा के लिए ध्वनिमूलक दृष्टि से सटीक, आर्थिक रूप से स्वीकार्य, मनोवैज्ञानिक रूप से अनुकूल और आदिवासी विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने हेतु अपेक्षाकृत आसान है। इसका अपना स्वतंत्र व्याकरण एवं शॉर्टहैण्ड लिपि है तथा कम्प्यूटर टाइपिंग के लिए संताली का फॉन्ट विकसित कर लिया गया है संताली व्याकरण पर गैर संताल जिसमें विदेशी विद्वान भी शामिल हैं ने व्यापक कार्य किया है।

मुख्य शब्द– लिपि, संताली, वर्ण, साहित्य, भाषा, व्याकरण, ध्वनिमूलक।

भारत विश्व का दूसरी बड़ी आबादी वाला देश है। इस देश में कई आदिवासी जातियां निवास करती हैं। संताल आदिवासी समुदाय इनमें से एक है। भारत की आदिवासी आबादी में जनसंख्या की दृष्टि से यह तीसरे नम्बर पर है, पर भाषायी एवं सांस्कृतिक विकास की दृष्टि में इसका स्थान पहला है। संताल समाज आज जहां एक ओर विकास के साथ कदम मिला कर चल रहा है, वहीं दूसरी ओर अपनी प्राचीन संस्कृति की सारी अच्छाइयों को विस्तार दे रहा है ताकि उसकी संस्कृक्ति, साहित्य और अधिक ऊंचाईयों को छू सके। इस विश्व आदिवासी दृष्टिकोण के फलस्वरूप ही निरंतर इसकी नयी रचनाएं सामने आ रही हैं।

क्षेत्र : नवनिर्मित राज्य झारखण्ड संताल बहुल क्षेत्र है। इसके अतिरिक्त पश्चिम बंगाल, उडीसा, छत्तीसगढ़ असम आदि राज्यों में भी संताल लोगों का निवास है। संतालों की बड़ी जनसंख्या भारत के अलावा नेपाल,

भूटान, बांगलादेश, मॉरिशस, त्रिनिदाद आदि देशों में भी बसी हुई है। संताली बोलने वाले विश्व के अन्य विकसित देशों जैसे नार्वे, जापान, ब्रिटेन, अमेरिका में भी निवास करते हैं।

नामकरण : ''संताल'' शब्द विभिन्न भाषाओं में भिन्न भिन्न प्रकार से लिखा और उच्चारित किया जाता है। संताल शब्द विभिन्न भाषा में भिन्न–भिन्न प्रकार से लिखा जाता है। अंग्रेजी में सोन्थाल (Sonthal) एवं संधान (Santhal) शब्द मिलता है। बंगला भाषी सओन्तार कहते हैं तथा मैथिली में सौन्तार या सओन्तार कहा जाता है। भाषा विज्ञान के ध्वनि नियम के अनुरूप 'सओन्तार' एवं 'संताल' एक हो मूल शब्द का विस्तार माना जा सकता है। 'र' या 'ला' में कोई भेद नहीं है। अतः संताल और संतार में कोई अन्तर नहीं है।[1]

संताल आदिवासी अपने को 'होड़' कहते हैं। होड़ का अर्थ 'आदमी' होता है। संताल, संथाल, संताड़, संवताल नामकरण क्रमशः भौगोलिक एवं उच्चारण भिन्नता और भाषा वैज्ञानिक परिवर्तन के कारण हुआ है।

संताल काल क्रम में हो खेरवाड़ मांझी संथाल के नाम भी जाने जाते रहें हैं। संभवतः खेरवाड़ नाम के संबंध में सतालों में मत है कि खेरवाड़ वंशज, मेहनती, वोर प्रवृति के कारण खेरवाड़ समुदाय पड़ा। 'मांझी' के संबंध में ऐसी मान्यता है कि अंग्रेजों से सम्पर्क के कारण यह नाम पड़ा। अंग्रेजों ने पहले पहले संताल ग्राम प्रधान 'मांझी हाड़ाम' से ही सपर्क किया था जिसके फलस्वरूप अंग्रेजों ने संतालों को माइझी कहा।

भाषा : संताली भाषा संताल आदिवासी (अनुसूचित जनजाति) की मातृभाषा है। संताली भाषा का नामकरण संताल समुदाय के आधार पर पड़ा है। यह आस्ट्रिक, आस्ट्रोएशियाटिक या आग्नेय शाखा परिवार की भाषा है। आस्ट्रिक शाखा भारत के आदिवासियों की सबसे बड़ों शाखा (मुण्डारी परिवार) है। संताली, मुंडारी, हो. खड़िया, जुवाङ, शबर, गुतीय, गोरुम, रेमोः, गेतः, निकोबारी, खासी आदि भाषाएं आस्ट्रिक शाखा के अंतर्गत ही आती हैं। इन भाषाओं की कुछ शाखाएं दक्षिण पूर्व द्वीप समूह में बोली जाती है।

संतालों की अपनी स्वतंत्र समृद्धशाली भाषिक, सांस्कृक्तिक और साहित्यिक परंपरा है। जिसके कारण संताली भाषा, साहित्य और संस्कृति का अपना स्वतंत्र अस्तित्व एवं पहचान है। भाषिक दृष्टि से संताली संभवतः भारत ही नहीं दुनियां की सबसे बड़ी आदिवासी भाषा है।[2]

लिपि : संताली भाषा का लेखन–पाठन जबसे आरम्भ हुआ तब से स्थान विशेष में कैथी, बंगला, देवनागरी, उड़िया तथा रोमन लिपि में होता आ रहा है। प्रारम्भ में कैथी लिपि उत्तरी बिहार में, देवनागरी मध्य बिहार में, बंग्ला लिपि दक्षिणी बिहार, रोमन लिपि का प्रचलन अंग्रेजी शासन से आरम्भ हुआ है। उड़िया लिपि उड़ीसा में प्रचलित है। इसके अलावे पं. रघुनाथ मुर्मू ने 'ओलचिकि', साधुराम चंद मुर्मू ने 'मॉज दोंदेर ऑक', मनोहर हांसदा ने 'होड़ आखोर गेनतेच्', श्यामद मांझी ने 'सानताड़ी आड़ांड तोनोल जो' तथा निर्मल कुमार वर्मा ने 'सिंधु घाटी लिपि' प्रस्तुत किया है।[3]

समस्या : संताली भाषा पर अनेक भाषाओं का प्रभाव रहा है। संताली भाषा की सीमाएं जहां–जहां अन्य भाषाओं यथा – बांग्ला, हिन्दी, उड़िया, असमी का सम्पर्क करती हैं, वहां–वहां यह शब्द उच्चारण को प्रभावित करती है। मानक भाषा अंग्रेजी, बांग्ला, हिन्दी, उड़िया, असमी आदि जहां संताली भाषा को प्रभावित करती है, वहीं संताली भी दूसरी क्षेत्रीय भाषाओं पर अपना प्रभाव छोड़ती है।

विभिन्न राज्यों में बसे होने के कारण संताली भाषा अनेक लिपियों में लिखी जा रही है और इस दृ ष्टि से यह बहुलिपि है। यही वजह है कि संताली भाषा के लेखन, पठन पाठन आदि में लिपि की समस्या बनी हुई है। फिलहाल संताली भाषा देवनागरी, उड़िया, बांग्ला, रोमन के साथ साथ ओलचिकि पांच लिपियों में लिखी व पढ़ी जा रही है।

इस भाषा परिवार का शब्द भण्डार बहुत ही समृद्ध है। प्रत्येक शब्द के अर्थ विस्तार एक विशेष क्रिया को दर्शाता है जिसे अंग्रेजी में टमतइंस ।बजपवद कहा जाता है। देश की विभिन्न लिपियों में लिखने के कारण संताली शब्द समूह के मूल रूप में विक्ति आ रही है। जो लिखा जाता है, उसे कई–कई तरह से पढ़ा जाता है।

प्रस्तुत लेख में मैं संताली लिखने के लिए विभिन्न लिपियों की वर्ण व्यवस्थाओं और उच्चारण ध्वनियों का वर्णन करते हुए मानक रूप के निर्धारण की संभावनाओं पर विचार करना चाहूंगा। भाषा विज्ञान और व्याकरणिक दृष्टि को ध्यान में रखते हुए हम इसे निम्नांकित तरीके से देख सकते हैं–

व्याकरण : किसी भी भाषा के व्याकरण को मुख्यत निम्न भागों में वर्गीकृत किया जाता रहा है। संताली भाषा व्याकरण को भी इन्हीं वर्गीकरण के अंतर्गत देखते हैं

1. वर्ण विचार (आखोर बिचार) Orthography
2. शब्द विचार (सबद बिचार) Etymology
3. वाक्य विचार (आयात बिचार) Syntax
4. चिन्ह विचार (चिन्हा विचार) Punctuation
5. छन्द विचार (गबान बिचार) Prosody[4]

विषय बिन्दुओं में वर्ण विचार को केन्द्रित करते हुए विभिन्न लिपियों पर विचार करने पर संख्या में भिन्नता देखने को मिलती है।

वर्ण को मुख्यतः दो वर्गों में बांटते हैं–

(क) स्वर वर्ण (राहा आड़ाङ बेहाटिजोक आखोर) Vowel एवं

(ख) व्यंजन वर्ण (केचेद् आडाङ हाटिजोक आखोर) Consonant[5]

(क) स्वर वर्ण (राहा आडाङ बेहाटिञोक आखोर) Vowel

मुख्यतः ओलचिकि, देवनागरी एवं रोमन लिपि पर केन्द्रित स्वर वर्ण का वर्गीकरण लिपि आधार पर इस प्रकार है

1. ओलचिकिस्वरवर्णओलचिकिवर्णविचारमेंपहलापंक्तिराहाआड़ाङकुलछःइसप्रकारहैदृ

ᱚ ᱟ ᱤ ᱩ ᱮ ᱳ

(अ) (आ) (ई) (उ) (ए) (ओ)6

2. देवनागरी लिपि स्वर वर्ण इस प्रकार 12 है

अ आ आ़ इ ई उ ऊ

ए ऐ ओ ओ़ औ[7]

3. रोमन लिपि स्वर वर्ण इस प्रकार 8 है–

A ạ म ẹप व ọ न8

(ख) व्यंजन वर्ण (केचेद् आड़ाङ हाटिओक आखार) Consonant– व्यंजन वर्ण में भी विभिन्न लिपियों के संताली में अलग–अलग संख्या हो जाते हैं। इसे निम्न प्रकार देखा जा सकता है–

1. ओलचिकि व्यंजन वर्ण इसमें कुल 24 हैं। इसका विभाजन इस प्रकार है –

(i) पारहाड़ केचेद् आड़ाङ – यह दूसरी पंक्ति में 6 है।

ᱛ ᱠ ᱥ ᱪ ᱯ ᱴ

अत् (त) आक् (क) ईस् (स) उच् (च) एप् (प) आंट् (ट)

(II) तापूग केचेद् आड़ाङ – यह तीसरी पंक्ति में 6 है।

ᱜ ᱡ ᱦ ᱫ ᱰ ᱵ

अग् (ग) आज् (ज) ईह् (ह) उद् (द) एड् (ड)ओब् (ब)

(iii) राड़ाङ केचेद् आड़ाङ – यह चौथी पक्ति में 6 है।

ᱝ ᱢ ᱧ ᱬ ᱱ ᱶ

अं() आम् (म) ईञ (ञ) उण् (ण) एन् (न)ओऊ (ऊ)

(iv) जेतलेद् केचेद् आड़ाङ – यह पांचवीं पंक्ति में 6 है।

ᱞ ᱣ ᱨ ᱭ ᱲ ᱷ

अल् (ल) आव् (व) ई ́(र) उय् (य) एड़ (ड़)ओह् (ह)

ध्वनि चिन्ह ओलचिकि लिपि में पांच हैं –

ᱸ ᱹ ᱺ ᱻ ᱽ

मुंटुडाः गहलाटुडाः रेला फारका ओहद्[9]

2. देवनागरी लिपि व्यंजन वर्णरू इसमें मुख्यतः 31 हैं। जिसे दो वर्गों में विभाजित किया गया है–

(क) उरिच साडे आखोर

(i) क ख ग घ ङ

(ii) च छ ज झ ञ

(iii) ट ठ ड ढ ण

(iv) त थ द ध न

(V) प फ ब भ म

उच्चारण स्थान = क वर्गआ आ, ह – कंठ (नाडरी)

= ख वर्ग इ ई, य, स – तालू (तारू)

= ट वर्ग र मुर्दा (केटेच् तारू)

= त वर्ग ल दंत (डाटा)

= प वर्ग उ, ऊ ओष्ठ (लुटी)

(ख) फारहड़ खुला साडे आखोर –

(vi) य, र, ल, व

इसके अतिरिक्त संयुक्त व्यंजन वर्ण दो हैं – ड़ एवं ढ़

तथा आधा आखोर चार हैं – क् (रू), च्, त्, प्

संयुक्त उच्चारण निम्न प्रकार हैं –

(i) ए ऐ = कंठ तालव्य (कंठ–तारू) वर्ण,

(ii) ओ औ = कंठ–ओष्ठ (कंठ – लुटी) वर्ण,

(iii) व = दंत – ओष्ठ (डाटा–लुटी) वर्ण,

(iv) ङ, ञ, ण, न, म = अनुनासिक (मूं) वर्ण है।10

2. रोमनलिपिव्यंजनवर्णरू इसमेंमुख्यतः32है।

K Kh G Gh N

(को) (खो) (गो) (घो) (ङ)

C Ch J Jh

(चो) (छो) (जो) (झो) (ञ)

T. Th. D. Dh. N.

(टो) (ठो) (डो) (ढो) (ण)

T Th D Dh N

(तो) (थो) (दो) (धो) (न)

P Ph B Bh M

(पो) (फो) (बो) (भो) (मो)

Y R L V W S H

(यो) (रो) (लो) (उवा) (आवा) (सो) (हो)

इसके अतिरिक्त आधा (अर्द्ध) वर्ण (आखोर) चार हैंदृ

K ′ C ′ T′ P′

एक् (क) एच् (च) एत् (त) एप् (प)[11]

निष्कर्ष : रूप में संताली समृद्धशाली लोक एवं शिष्ट साहित्य की परम्परा के बावजूद संताली भाषा का मानक रूप निर्धारण नहीं हो सका है। इसलिए शब्द उच्चारण, शब्द प्रयोग तथा वाक्य सरचना में एकरूपता नहीं आ पायी है। हालांकि 22 दिसम्बर 2003 को भारतीय संविधान की आठवों अनुसूची के तहत इसे भाषा का दरजा प्रदान कर दिया गया है, परंतु संताली भाषा के मानकीकरण का सवाल अभी तक हल नहीं किया जा सका है। संताली भाषा पांच लिपियों देवनागरी, उडिया, बाला, रोमन के साथ उनके पास अपनी स्वयं की

लिपि श्ओलचिकिश है जो संताली भाषा के लिए ध्वनिमूलक दृष्टि से सटीक, आर्थिक रूप से स्वीकार्य, मनोवैज्ञानिक रूप से अनुकूल और आदिवासी विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने हेतु अपेक्षाकृत आसान है। इसका अपना स्वतंत्र व्याकरण एवं शॉर्टहैण्ड लिपि है तथा कम्प्यूटर टाइपिंग के लिए संताली का फॉन्ट विकसित कर लिया गया है संताली व्याकरण पर गैर संताल जिसमें विदेशी विद्वान भी शामिल हैं ने व्यापक कार्य किया है।

(क) संदर्भ सूची

1. विद्यानन झा, मैथिली ओ संताली सम्पर्क आ सामीप्य विदित, पृष्ठ 16–19
2. डॉ. पी. सी. हेम्ब्रम, संताली ए नेचुरल लैंग्वेज, पृष्ठ 10
3. डॉ. के. सी. टुडू, सानताड़ी पारसी उनुरूम (संताली भाषा परिचय), संताली साहित्य परिषद, रांची, 2005, पृष्ठ 8
4. प्रो. सनातन हांसदा, नहॉक संताली बेयान (आधुनिक संताली व्याकरण), संचयन प्रकाशन, पटना–4, पृष्ठ 3
5. डॉ. के. सी. टुडू, सानताड़ी पारसी उनुरूम (संताली भाषा परिचय), संताली साहित्य परिषद, रांची, 2005, पृष्ठ 8
6. पं. रघुनाथ मुर्मू, रोनोड़ (ए संताली ग्रामर इन संताली), आसेका (उड़ीसा), रायरंगपुर, 1993, पृष्ठ 7
7. 3. डॉ. डोमन साहु 'समीर', हिन्दी और संतालीरू तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ 46
8. श्री सुशील हेम्ब्रम, संताली साहित्य रेयाक् इतिहास, 1992, पृष्ठ 17
9. पं. रघुनाथ मुर्मू, रोनोड़ (ए संताली ग्रामर इन संताली), आसेका (उड़ीसा), रायरंगपुर, 1993, पृष्ठ 6 – 7
10. डॉ. के. सी. टुडू, सानताड़ी पारसी उनुरूम (संताली भाषा परिचय), संताली साहित्य परिषद, रांची, 2005, पृष्ठ 9 – 11
11. श्री सुशील हेम्ब्रम, संताली साहित्य रेयाक् इतिहास, 1992, पृष्ठ 18 – 23

(ख) साक्षात्कार

1. डॉ. रामदयाल मुण्डा, पूर्व कुलपति, रांची विश्वविद्यालय, रांची
2. डॉ. गणेश मुर्मू, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची
3. डॉ. भुवनेश्वर सवैया, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची